Item Code: 642 **Participant Code:** 123

रास्ते मे मिली एक लड़की।

रोहन नामक एक किसान रहता था। उसकी पत्नी का नाम प्रिया था। शादी को कई साल हो चूके थे। उनकी आर्थिक स्थिति भी दयनीय थी। उनका कोई संतान नही था। दूसरों की तरह रोहन और प्रिया को भी इच्छा थी कि उनका भी कोई संतान हो। जो उन लोगो को माँ-पापा कहकर पुकारे और उनके के साथ खेले आदि चाहते थे। लेकिन यह सपना भगवान को देने की इच्छा नही थी। प्रिया को बच्चे बहुत पसंद थे। वह अपने ~~पड़ोसियो~~ पड़ोसियो के घर जाकर अपनी इच्छा पूरी करती थी। पर उसका आना बच्चो के माता-पिता को अच्छी नही लगती थी। जब प्रिया उनके घर आती तो तब उसे बहुत बुरी-बुरी बाते सुनाते थे। तो प्रिया वहाँ आना जाना बंद कर दी। और वह सुबह, शाम भगवान से प्रार्थना करती थी। एक दिन जब प्रिया अपने पति को भोजन देने

खेतो की ओर जा रही थी तो उसे एक बच्चे की रोने की आवाज आ रही थी। वह उस रोने की दिशा में जाकर देखा तो एक प्यारी बच्ची बहुत रो रही थी। वह बच्ची को एक आँख नही थी और उसे एक सूनसान जगह पर कोई छोड़कर चला गया था। उसे उस बच्ची पर दया आ गई और वहाँ से बच्ची को उठाकर अपनी पति के पास गई। प्रिया रोहन के पास जाकर कहा "देखिए इस प्यारी सी बच्ची को कोई छोड़कर चला गया था।" जब रोहन ने इस बच्ची को देखा तो प्रिया से कहा "इस बच्ची को तो एक आँख नही है। यह सुनकर प्रिया बोली "तो क्या हुआ भगवान की यही इच्छा थी। हम तो एक संतान के लिए क्या कुछ नही कर रहे थे।" इस दुनिया के लोग तो बहुत स्वार्थी हो चुके है।" रोहन बोला "तुम सही कह रही हो।"

"चलो इसे अपने घर लेकर चलते है।" उस बच्ची को शेहन और प्रिया प्यार से खुशी नाम देते है। ~~उनकी~~ ~~उनके~~ घर उनके घर खुशियाँ जो आई थी। वह बच्ची आने से प्रिया और शेहन बहुत खुश थे। शेहन और प्रिया भगवान जी को शुक्रिया करते है।

समय के साथ खुशी भी बड़ी होने लगी। अब उसका पढने का समय भी आ रहा था। यह सोचकर प्रिया बहुत दुःखी होने लगी। प्रिया को दुःखी देखकर रोहन पूछता है "क्या हुआ, मैं इतने दिनों से देख रहा हूँ तुम बहुत दुःखी में रहती हो। प्रिया बोली "देखो अब खुशी भी बड़ी हो रही है उसे पढाने का समय भी आ रहा है। उसको तो एक आँख नही है जब खुशी पढने लगी तो उसे सारे बच्चे उसका मजाक और उसे परेशान करेंगे। इसलिए मैं सोच रही हूँ कि अपनी

एक आँख अपनी बच्ची को दिया जाए। यह सुनकर रोहन की होश उड़ जाती है। और कहता है 'तुम पागल हो चुकी हो, यह सब करना ठीक नहीं होगा'। फिर भी प्रिया रोहन की बात को नहीं मानती है। अब उसका पति कुछ भी नहीं कर सकता। प्रिया अपनी पति की के बातों को ना मानकर खुशी को अपनी आँख है दिया। अब प्रिया को एक आँख से नहीं देखा जाता था। अब वह खुश थी। अब रोहन भी बहुत मेहनत करता था कि अपनी पत्नी की आँखे फिर से उसे दिला पाँऊ। और प्रिया अन्य महिलाओ के घर जाकर काम करती थी। जब खुशी बड़ी होने लगी तो हमेशा अपनी माँ से पूछा करती कि 'अपकी एक आँख कहा है। तब प्रिया कहती थी उसकी एक आँख जन्म से ही नहीं है। प्रिया खुशी से सच नहीं बताती थी।

जब खुशी बड़ी कक्षा में पहुँच गई। तब उसकी माँ उसे स्कूल छोड़ने जाती थी। प्रिया को देखकर उसके सारे दोस्त डर गए और वहाँ से भाग गए। स्कूल मे तो अपनी माँ को कुछ भी बोली पर घर आने के बाद वह शुरु हो गई। 'माँ आज से आप मेरे साथ स्कूल छोड़ने मत आया करो"। प्रिया बोली 'क्या हुआ, मैंने क्या किया। खुशी गुस्से से बोली 'आप ने देखा नही कैसे आप की वजह से मेरे सारे दोस्त डर कर भाग गए'। 'आज से मुझे स्कूल छोड़ने मत आना। तब प्रिया प्यार से बोली 'ठीक है बेटी मैं नही तेरे साथ आऊँगी। यह सब बात कहते हुए खुशी को जरा से भी दुःख नही हुआ अपने माँ के बारे में सोचते हुए। एक दिन जब खुशी समय से घर नही पहुँची तब

प्रिया डर गई और लाने केलिए स्कूल गई। जब प्रिया स्कूल पहुंची तो देखा खुशी अपने दोस्तों के साथ बातें कर रही थी। तब ही ~~अब~~ अचानक उन में से एक दोस्त खुशी की माँ को देख लेती है और वहाँ से भाग जाती है। यह देखकर सारे दोस्त भी भाग जाते है। खुशी अपनी माँ की ओर गुस्से से देखकर कहती है 'आप यहा क्यो आई हो, आप मेरी बातों ~~क्~~ को क्यों नही मानती हो. आप यहाँ से चली जाइए। यह सुनकर प्रिया घर चली जाती है क्योंकि उसे डर था उसकी बेटी कुछ गलत ना कर दे। और खुशी ~~मुर~~ अपनी माँ की वजह से घर नहीं जाती और स्कूल में ही रुक जाती है। रात को जब रोहन काम कर के आता है तो पूछता है 'मेरी प्यारी बेटी कहा है ? तब प्रिया अपनी पति को सारी बात

बताती है। और कहती है शायद खुशी मुझ से बहुत प्यार करती है इसीलिए ऐसा किया हो गा। प्रिया अपने दुःखी मन के बारे मे नही रोहन से कुछ नही कहती है। पर रोहन को अपनी पत्नी को दुःख पता चल जाता है। और प्रिया से कुछ न कहे बिना घर के बाहर चला जाता है। रोहन अपनी बेटी को सच बताने जा रहा था। वहाँ उसे अपनी बेटी गुस्से मे दिखाई पड़ती है। रोहन अपनी बेटी के पास जाकर बैठता है और कहता है पूछता है, तुम्हे अपनी माँ में क्या नही अच्छा लगता है। तब खुशी बोली मेरी माँ की एक आदत। तब रोहन हसके मुस्कुराते हुए बोलता कि बेटी यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है। यह सुनकर खुशी बोली मेरी वजह से मैं कुछ समझी नही। तब रोहन सारी बातें बताता है और यह भी कहता है कि तुम

रास्ते मे मिली एक लड़की हो। यह सुनकर खुशी को विश्वास नहीं हुआ। 'यह सब झूठ है, मैं नही मानती'। रोहन कहा 'यह ही सच है, यह भी नहीं तुम जब पढ़ने जाओगी तो तुम्हे कोई परेशान ना करे इसलिए तुम्हारी माँ अपनी आँखे तुम्हे दे दी। तुम ~~उसे~~ एक ~~किस्मात~~ ~~कीस्मत~~ किस्मात वाली हो जो तुम्हे प्रिया जैसी माँ मिली। यह सुनकर ~~खि~~ खुशी बहुत दुःखी होती है। और वहाँ से तेजी से भाग कर अपनी माँ के पास जाती है। ~~अपनी~~ माँ प्रिया से लिपट जाती है। और रोने लगती है। प्रिया खुशी से पूछती है 'क्या हुआ तुम रो क्यो रही हो। ~~क~~ 'खुशी बोली मुझे सच पता चल चुका है। अब से मैं आप से भूरी-भूरी बाते नहीं कहूँगी। आप मुझे स्कूल छोड़ने आ सकती हो।

अखिल खुशी को अपनी गलती समझमें आ जाती है। उसे अब समझ में आ जाती है कि एक माँ ही यह सब कुछ कर सकती है। उसे अपनी माँ का प्यार समझ में आ जाती है। अपने माता-पिता को कभी भी बुरा न समझे। इस दुनिया की माँ अपने बच्चों के लिए कुछ भी कर सकती है। अपनी माता-पिता को बेइज्जती ना करे। माँ शब्द कहना बहुत आसान है पर समझना इनता ही मुश्किल है। बच्चों केलिए माँ अपनी जान भी दे ~~जाती~~ है। सकती है।